निपुण भारत मिशन के परिप्रेक्ष्य में अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त करने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

लेखक :मिथलेश मंडोवरा

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

उद्देश्य :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधारभूत सिद्धांत ऐसे बेहतर इंसानों का विकास करना है जो तर्क संगत विचार और कर्म करने में सक्षम हो साथ ही करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन, सतत सीखते रहना, समस्या समाधान, रचनात्मक कल्पनाशीलता, नैतिक मूल्य आधारित समाज का निर्माण करने में सक्षम हों

इसका उद्देश्य ऐसे लोगों को तैयार करना है जो संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी, बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान दे सकें

उपर्युक्त उद्देश्य एंव आधारभूत सिद्धांतों की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि -

"हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता प्राथमिक विद्यालयो में 2025 तक सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) प्राप्त करना होना चाहिए। हमारे विद्यार्थियों का एक बड़ा हिस्सा अगर बुनियादी शिक्षा (पढ़ना, लिखना और बुनियादी स्तर पर अंकगणित) पहले हासिल नहीं करेंगे तो शेष शिक्षा नीति काफी हद तक अप्रासंगिक होगी।"

उपर्युक्त कथन की प्रासंगिकता से वचनबद्धता दर्शाने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति आगे पहल करती है कि "सभी बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तत्काल रूप से एक राष्ट्रीय अभियान बनेगा .....शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालय/कक्षाओं में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) प्राप्त करना होगा, सीखने की बुनियादी आवश्यकताओं (साक्षरता और संख्या ज्ञान) को हासिल करने पर ही हमारे विद्यार्थियों के लिए शेष शिक्षा नीति प्रासंगिक होगी।"

विद्यालय में प्राचार्य की भूमिका एक प्रशासनिक मुखिया के तौर पर होती है, जिसे राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति के साथ-साथ स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी प्रयास करना पड़ता है चूंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधारभूत साक्षरता पर विशेष जोर देती है साथ ही यह अपेक्षा भी करती है की सभी स्टेकहोल्डर्स (हितधारक) इस राष्ट्रीय लक्ष्य की पूर्ति में अपनी अपनी सशक्त भूमिका निभाएं

इस मॉड्यूल लेखन का उद्देश्य यही है कि आधारभूत साक्षरता प्राप्त करने के लिए जिस निपुण भारत मिशन की शुरुआत भारत सरकार द्वारा की गई है, साथ ही आधारभूत साक्षरता के जो मानक निपुण भारत मिशन के तहत लर्निंग आउटकम्स के तौर पर निर्धारित किए गए हैं उनकी पूर्ति में या उनके प्राप्ति में विद्यालय प्रधानाचार्य किस प्रकार अपनी भूमिका निभा सकता है या दूसरे शब्दों में कहें तो विद्यालय प्रधानाचार्य की क्या भूमिका होनी चाहिए ?

इस मॉड्यूल के माध्यम से हमारा प्रधानाचार्य वर्ग निपुण भारत मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी कर पाएगा, साथ ही एफ एल एन के तहत निर्धारित लर्निंग आउटकम्स (सीखने के प्रतिफलों) के बारे में विस्तार से जान पाएगा और अपनी समझ विकसित करते हुए इस मॉड्यूल के माध्यम से सहयोग लेते हुए निपुण भारत मिशन के समयबद्ध लक्ष्य को प्राप्त करने में अपनी भूमिका निभा सकेगा।

कुछ अवधारणात्मक प्रश्न :-

- निपुण भारत मिशन का पूरा नाम क्या है?
- निपुण भारत मिशन की शुरुआत कब हुई?
- निपुण भारत मिशन के अंतर्गत किसे लाभ मिलेगा?
- निपुण भारत मिशन का उद्देश्य क्या है?
- निपुण भारत मिशन के तहत निर्धारित सीखने के प्रतिफल कौन कौन से है ?
- निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु किन किन को हितधारक निर्धारित किया गया है ?
- निपुण भारत मिशन में निर्धारित प्रतिफलों को प्राप्त करने में विद्यालय प्रमुख की क्या भूमिका है ?

प्रस्तावना :-

देश के हर बच्चे को शिक्षित करने के लिए भारत सरकार द्वारा लगातार कोशिश की जा रही है। इसी तरह देश के छात्रों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार द्वारा **निपुण भारत मिशन** की शुरुआत की गई है। ताकि देश में **नई शिक्षा नीति** के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा शिक्षा का लाभ मिल सके और साथ ही बच्चे और उनके अभिभावक भी शिक्षा के प्रति जागरूक हो सके।

निपुण भारत मिशन के माध्यम से बच्चों में आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को बढ़ावा देना है ताकि आगे चलकर बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। सरकार का प्रयास है कि देश के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा प्रदान की जाए जिससे बच्चों द्वारा भविष्य में शिक्षा का पूर्ण सदुपयोग किया जा सके।

निपुण भारत मिशन क्या है?

केंद्र सरकार द्वारा शिक्षा क्षेत्र में विकास करने हेतु निपुण भारत योजना की शुरुआत 5 जुलाई 2021 में की गई थी। NIPUN Bharat Mission का पूरा नाम National Initiative For Proficiency in Reading with Understanding & Numeracy है। इस मिशन के माध्यम से कक्षा 3 तक के छात्रों में आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। इसके लिए सभी सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों में इस मिशन के अंतर्गत सहयोग दिया जाएगा ताकि बच्चों में बुनियादी शिक्षा मजबूत हो सके।

निपुण भारत मिशन की क्रियान्वयन प्रक्रिया

निपुण भारत मिशन के तहत 3 वर्ष से 9 वर्ष तक के बच्चों को शामिल किया गया है। जिसके अंतर्गत प्री स्कूल 1, प्री स्कूल 2 और प्री स्कूल 3 के बाद ग्रेड 1, ग्रेड 2 और ग्रेड 3 की कक्षाएं शामिल होगी।

इसके लिए राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में 5 स्तरीय तंत्र की स्थापना की जाएगी। जिसमें राष्ट्रीय, राज्य, जिला, ब्लाक और स्कूल स्तर पर संचालन किया जाएगा। इन सभी स्तरों पर नोडल अधिकारी द्वारा कार्य एवं प्रक्रिया पर नजर रखी जाएगी।

निपुण भारत मिशन का क्रियान्वयन शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा साक्षरता विभाग द्वारा किया जाएगा। ताकि देश के सभी छात्रों को इन कक्षाओं के दौरान भाषा और गणित का बेहतर ज्ञान प्रदान किया जा सके और बच्चों की बुनियादी शिक्षा की नींव मजबूत करने के लिए सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जा सके ।

निपुण भारत मिशन का प्रशासनिक संचरण

NIPUN Bharat Mission के तहत विद्यार्थियों को बेहतर बेसिक/प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए मूलभूत शिक्षा पर ध्यान दिया जाएगा। नेशनल मिशन के अंतर्गत रणनीति और दस्तावेजों को तैयार किए जाने के साथ-साथ स्कूल और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय के रूप में भी कार्य करेगा। इसके अलावा मिशन निदेशक एवं एजेंसी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्तर पर कार्य किया जाएगा। निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्रशासनिक संचरण 5 स्तरों पर होता है। जिसकी जानकारी कुछ इस प्रकार है।

1. **राष्ट्रीय स्तर (National Level Mission)** – यह राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जाएगा। जिसका संचालन स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा किया जाएगा। छात्रों के लिए इस मिशन के अंतर्गत लर्निंग गैप्स, असेसमेंट, लर्निंग स्ट्रेटेजी, डॉक्यूमेंट बनाने,लर्निंग मैट्रिक्स तैयार करने जैसे कार्य किए जाएंगे।
2. **राज्य स्तर पर (State Level Mission)** – इसे राज्य स्तर पर आयोजित किया जाएगा। इस स्तर पर संचालन की जिम्मेदारी स्कूल शिक्षा विभाग की होगी और इसके लिए राज्य क्रियान्वयन समिति का गठन किया जाएगा। राज्य स्तर पर क्रियान्वयन राज्य के सेक्रेटरी हेड द्वारा किया जाएगा।
3. **जिला स्तर पर (District Level Mission)** – इस मिशन का जिला स्तर पर संचालन डिप्टी मजिस्ट्रेट और डिप्टी कमिश्नर करेंगे। इस मिशन को जिला स्तर पर तैयार करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारी, कमेटी के सदस्यों में सीईओ, डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर ऑफ हेल्थ आदि सदस्य नियुक्त किए जाते हैं।
4. **ब्लॉक क्लस्टर मिशन (Block Cluster Mission)** – निपुण भारत मिशन के अंतर्गत ब्लॉक क्लस्टर मिशन स्तर पर क्रियान्वयन ब्लॉक लेवल पर होता है। इस स्तर पर मिशन का संचालन और साथ ही इसकी निगरानी करने का कार्य ब्लॉक एजुकेशन ऑफीसर और ब्लॉक रिसोर्सेज पर्सन द्वारा किया जाता है।
5. **विद्यालय प्रबंधन समिति एंव समुदाय की सहभागिता (School Management Community & Community Participation)** – इस मिशन का संचालन स्कूल और कम्युनिटी स्तर पर किया जाएगा। इस मिशन के माध्यम से देश भर में शिक्षा अभियान से संबंधित जागरूकता फैलाने का कार्य किया जाएगा। स्कूल मैनेजमेंट और अभिभावकों के द्वारा भी इस मिशन के अंतर्गत योगदान दिया जाएगा, जिससे बच्चों की शिक्षा में सुधार लाने के लिए सभी को इस मिशन के माध्यम से जागरूक किया जा सके

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता लक्ष्य की अवधारणा

बाल्यकाल की मजबूत नींव का बच्चों के विकास पर स्थायी प्रभाव पड़ता है और इसे औपचारिक स्कूली शिक्षा में बच्चों के नामांकन और भागीदारी में सुधार के लिए महत्वपूर्ण इनपुट माना जाता है। दक्षताओं के रूप में उन्नत सीखने के परिणाम शिक्षा में गुणवत्ता लाने और इसकी स्थिरता सुनिश्चित करने की कुंजी हैं। बच्चों को विश्लेषण करने, तर्क करने और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने और आजीवन सीखने वाले बनने की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता है।

एनईपी 2020 एक बच्चे के समग्र विकास पर केंद्रित है जिसमें शारीरिक और मानसिक विकास, सामाजिक-भावनात्मक विकास, साक्षरता और संख्यात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, आध्यात्मिक और नैतिक विकास, कला और सौंदर्य विकास जैसे डोमेन विकास में शामिल है। निपुण भारत के तहत, इन सभी डोमेन को तीन प्रमुख लक्ष्यों में शामिल किया गया है:

- o विकासात्मक लक्ष्य 1: बच्चे अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखें
- o विकासात्मक लक्ष्य 2: बच्चे प्रभावी संचारक बनें
- o विकासात्मक लक्ष्य 3: बच्चे सम्मिलित शिक्षार्थी बनें और अपने तात्कालिक परिवेश से जुड़े।

सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउट कम्स)

निपुण भारत फ्रेमवर्क के तहत मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए लक्ष्य

बालवाटिका या उम्र 5-6 वर्ष

मौखिक भाषा	1. मित्रों और शिक्षकों से बातचीत 2. समझ के साथ तुकबंदी/कविताएँ गाता है
पढ़ना	1. किताबों को देखता है और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करता है 2. कुछ परिचित दोहराए गए शब्दों को इंगित करना और पहचानना शुरू करें (कंटेनरों/खाद्य रैपरों पर शब्दों को देखें) 3. अक्षरों और संगत ध्वनियों को पहचानता है 4. कम से कम 2 से 3 अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ता है।
लेखन	1. खेल के दौरान लिखने की क्रिया का अनुकरण करता है और पहचानने योग्य अक्षर बनाना शुरू करता है 2. आत्म-अभिव्यक्ति के लिए स्क्रिबल्स/ड्राइंग और पेंट पत्र का उपयोग करता है 3. एक पेंसिल का उपयोग करता है और उसे पहचानने योग्य बनाने के लिए उसे ठीक से पकड़ता है 4. अपना पहला नाम पहचानता है और लिखता है
अंकगणित/ संख्यात्मकता	1. वस्तुओं को गिनता है और 10 तक के अंकों को सहसंबंधित करता है 2. 10 तक के अंकों को पहचानता है और पढ़ता है 3. वस्तुओं की संख्या के आधार पर दो समूहों की तुलना करता है और इससे अधिक/कम/बराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करता है। 4. संख्याओं/वस्तुओं/आकृतियों/घटनाओं की घटना को एक क्रम में व्यवस्थित करता है 5. वस्तुओं को उनकी अवलोकन योग्य विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करता है और वर्गीकरण के मानदंडों को संप्रेषित करता है 6. दीर्घ जैसे तुलनात्मक शब्दों के लिए शब्दावली का उपयोग करता है। अपने आस-पास की विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में सबसे लंबा, सबसे ऊंचा, छोटा, सबसे छोटा, इससे भारी, इससे हल्का आदि।

कक्षा 1 या आयु 6-7 वर्ष

मौखिक भाषा	1. दोस्तों और शिक्षक के साथ उसकी जरूरतों, परिवेश के बारे में बातचीत 2. कक्षा में उपलब्ध तस्वीरों के बारे में चर्चा 3. क्रिया के साथ कविताएँ/गीत सुनाना
पढ़ना	1. जोर से पढ़ने/कहानी सुनाने के सत्र के दौरान सक्रिय रूप से भाग लेता है और कहानी सत्र के दौरान और उसके बाद सवालों के जवाब देता है; प्रॉप्स और कठपुतलियों के साथ परिचित कहानी प्रस्तुत करता है 2. आविष्कृत वर्तनी वाले शब्दों को लिखने के लिए ध्वनि प्रतीक अनुरूपता का उपयोग करता है। 3. उम्र के अनुरूप अज्ञात पाठ में कम से कम 4-5 सरल शब्दों से युक्त छोटे वाक्य पढ़ता है
लेखन	1. परिचित सन्दर्भों (कहानी/कविता/पर्यावरण मुद्रण आदि) में आने वाले शब्दों की मात्राओं से परिचय विकसित करता है। 2. अर्थ संप्रेषित करने के लिए चीजें लिखता है, बनाता है और अपने कार्यपत्रक पर नामों का प्रतिनिधित्व करता है, शुभकामना संदेश देता है, पहचानने योग्य वस्तुओं/लोगों के चित्र बनाता है।
अंकगणित/ संख्यात्मकता	1. वस्तुओं को 20 तक गिनता है 2. 99 तक की संख्याओं को पढ़ता और लिखता है 3. दैनिक जीवन स्थितियों में 9 तक की संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करना 4. अपने चारों ओर 3डी आकृतियों (ठोस आकृतियों) जैसे गोल/सपाट सतहों, कोनों और किनारों की संख्या आदि के भौतिक गुणों का अवलोकन और वर्णन करता है। 5. गैर-मानक गैर-समान इकाइयों जैसे हाथ का फैलाव, पदचिन्ह, उंगलियों आदि का उपयोग करके लंबाई का अनुमान और सत्यापन करता है और गैर-मानक वर्दी इकाइयों कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करके क्षमता का अनुमान लगाता है और सत्यापित करता है। 6. सत्रों और संख्याओं का उपयोग करके छोटी कविताएँ और कहानियाँ बनाता और सुनाता है

कक्षा 2 या उम्र 7-8 वर्ष

मौखिक भाषा	1. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट के बारे में बातचीत 2. प्रश्न पूछने के लिए बातचीत में शामिल होता है और दूसरों की बातें सुनता है। 3. गीत/कविताएँ सुनाता है 4. पत्थरों/कविताओं/मुद्रण आदि से परिचित शब्दों को दोहराता है।
पढ़ना	1. बच्चों के साहित्य/पाठ्यपुस्तक से शब्दों को पढ़ता है और सुनाता/पुनः बताता है 2. दिए गए किसी शब्द के अक्षरों से नए शब्द बनाता है 3. उचित गति (लगभग 45 से 60 शब्द प्रति मिनट सही) समझ और स्पष्टता के साथ सरल शब्दों के साथ 8-10 वाक्यों के आयु-उपयुक्त अज्ञात पाठ को पढ़ता है।
लेखन	1. स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए छोटे/सरल वाक्यों को सही ढंग सेलिखता है 2. नामकरण शब्दों, क्रिया शब्दों और विराम चिह्नों को पहचानता है
अंकगणित/ संख्यात्मकता	1. 999 तक की संख्याओं को पढ़ता और लिखता है 2. दैनिक जीवन की स्थितियों में 99 तक की संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करता है, जिनका योग 99 से अधिक नहीं होता 3. गुणा को बार-बार जोड़ने और विभाजन को समान वितरण/साझा करने के रूप में करता है और 2, 3 और 4 के गुणन तथ्यों (सारणी) का निर्माण करता है। 4. रॉड, पेंसिल, धागा, कप, चम्मच, मग आदि जैसी गैर-मानक समान इकाइयों का उपयोग करके लंबाई/दूरी/क्षमता का अनुमान और माप करता है और सरल संतुलन का उपयोग करके वजन की तुलना करता है। 5. आयत, त्रिभुज, वृत्त, अंडाकार आदि जैसी 2-डी आकृतियों को पहचानता है और उनका वर्णन करता है। 6. स्थानिक शब्दावली का उपयोग करता है जैसे दूर/पास, अंदर/बाहर, ऊपर/नीचे, बाएँ/दाएँ, सामने/पीछे, ऊपर/नीचे आदि। 7. संख्याओं और आकृतियों का उपयोग करके सरल पहेलियाँ बनाता और हल करता है

कक्षा 3 या आयु 8-9 वर्ष

मौखिक भाषा	1. घर/स्कूल की भाषा में उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करके स्पष्टता के साथ बातचीत करना 2. कक्षा में उपलब्ध तस्वीरों व चित्रों के बारे में चर्चा 3. प्रश्न पूछने, अनुभव बताने, दूसरों की बात सुनने और प्रतिक्रिया देने के लिए बातचीत में शामिल होता है 4. व्यक्तिगत रूप से और समूह में स्वर के साथ और मॉड्यूलेशन के साथ कविताएँ सुनाता है।
पढ़ना	1. परिचित पुस्तकों/पाठ्यपुस्तकों में जानकारी ढूँढना Bhiobhi 3. पाठ में दिए गए निर्देशों को पढ़ता है और उनका पालन करता है 4. आयु-उपयुक्त अज्ञात कहानी/बी-10 वाक्यों के पैराग्राफ को पढ़ने के आधार पर 4 में से कम से कम 3 प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा।
लेखन	1. विभिन्न प्रयोजनों के लिए लघु संदेश लिखता है 2. लिखने के लिए क्रियात्मक शब्दों, नामकरण शब्दों और विराम चिह्नों का उपयोग करता है 3. व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध वाक्य लिखता है 4. व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्यों के साथ स्वयं छोटे पैराग्राफ और लघु कहानियाँ लिखता है।
अंकगणित/ संख्यात्मकता	1. 9999 तक की संख्याओं को पढ़ता और लिखता है 2. 999 तक की संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करके दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करता है, जिनका योग 999 से अधिक नहीं होता है 3. संख्या 2 से 10 तक के गुणन तथ्यों (सारणी) का निर्माण और उपयोग करता है और विभाजन तथ्यों का उपयोग करता है 4. एम, किमी, क्यू, किग्रा, लीटर आदि जैसी मानक इकाइयों का उपयोग करके लंबाई/दूरी, वजन और क्षमता का अनुमान और माप। 5. बुनियादी 2डी आकृतियों को 3डी आकृतियों (ठोस आकृतियों) के साथ पहचानता है और जोड़ता है और उनके गुणों जैसे चेहरे, किनारों और कोनों की संख्या आदि का वर्णन करता है। 6. कैलेंडर पर एक विशेष तिथि और संबंधित दिन की पहचान करता है; घड़ी पर समय आधे घंटे में पढ़ता है 7. संपूर्ण के आधे, एक-चौथाई, तीन-चौथाई और वस्तुओं के संग्रह की पहचान करता है 8. संख्याओं, घटनाओं और आकृतियों पर सरल पैटर्न के लिए नियमों की पहचान, विस्तार और संचार करता है

लीडरशिप की अवधारणा - विद्यालय प्रमुख/संस्था प्रधान के विशेष संदर्भ में

स्कूल प्रिंसिपल के कार्य को प्रभावी ढंग से निष्पादित करने के लिए बहुत अधिक कठोरता और ज्ञान की आवश्यकता होती है। एक प्रिंसिपल के दैनिक कार्यों में स्कूली शिक्षा के कई पहलुओं को प्रभावित करना और मार्गदर्शन करना शामिल होता है। एक प्रिंसिपल के कुछ मुख्य कार्य इस प्रकार हैं –

- वैश्विक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए स्कूल के लिए एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण विकसित करें
- एक स्कूल नीति तैयार करें और एक सीखने का माहौल प्रदान करें जहां छात्रों में सामाजिक और पर्यावरण अनुकूल व्यवहार, मूल्य और आदतें विकसित हों जिन्हें हम अपने समाज में देखना चाहते हैं।
- स्कूल के प्रशासनिक प्रमुख के रूप में कार्य करना और एक स्वस्थ शिक्षक-छात्र संबंध विकसित करना
- कर्मचारियों/छात्रों/हितधारकों/स्कूल प्रबंधन समिति द्वारा दिए गए नवीन विचारों को शामिल करते हुए एक योजना तैयार करें और उसे विभिन्न हितधारकों के साथ साझा करें।
- कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सभी हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- विद्यार्थियों के लिए पीने के पानी और अन्य सुविधाओं की आपूर्ति के लिए संतोषजनक व्यवस्था करें और सुनिश्चित करें कि स्कूल भवन और उसके फर्नीचर, कार्यालय उपकरण, प्रयोगशालाएं, खेल के मैदान, स्कूल उद्यान आदि का उचित और सावधानीपूर्वक रखरखाव किया जाए।
- टिकाऊ जीवन के प्रमुख कारकों जैसे ऊर्जा बचत, जल बचत, हरित भवनों का विकास, शून्य-अपशिष्ट नीति, रीसाइक्लिंग कार्यक्रम, हरित आवरण में सुधार, जैव विविधता साक्षरता कार्यक्रम का आकलन और विकास करें।
- स्कूल स्टाफ, छात्रों और उनके परिवारों को यह दिखाने के लिए तंत्र बनाएं कि वे व्यावहारिक रूप से जलवायु परिवर्तन को रोकने और पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने में कैसे मदद कर सकते हैं।
- कक्षा शिक्षण का पर्यवेक्षण करें और समान विषय क्षेत्र के साथ-साथ अन्य विषयों के शिक्षकों के बीच सहयोग और समन्वय सुनिश्चित करें।
- आत्म-सुधार के लिए शिक्षकों और छात्रों की पहल जैसे मेंटर-मेंटी अवधारणा को बढ़ावा देना और उन्हें ऐसे प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना जो शैक्षिक रूप से अच्छे हों।
- विद्यार्थियों की शारीरिक भलाई, स्वच्छता के उच्च मानकों और स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देना, और एक वर्ष में छात्रों की दो मेडिकल परीक्षाओं की व्यवस्था करना और माता-पिता/अभिभावकों को मेडिकल रिपोर्ट भेजना।
- समय-समय पर सरकार/बोर्ड द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार स्कूल परीक्षाएं आयोजित करें

निपुण भारत मिशन में निर्धारित लक्ष्यों (सीखने के प्रतिफल) को प्राप्त करने में विद्यालय प्रमुख की विशेष भूमिका

शिक्षकों को साथ में लेकर वातावरण तैयार करें -

- ❖ सत्र के आरंभ में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए कक्षा के मानदंड/नियम तय कर उसे कक्षा में रखें और लगातार लागू करें।
- ❖ छात्रों को उनके नाम से संबोधित किया जाना चाहिए और शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि देखभाल और सम्मान का माहौल बनाने के लिए जब बच्चे उनसे बात कर रहे हों तो वे आँख से संपर्क करें।
- ❖ प्रत्येक बच्चे की शक्तियों और क्षमताओं को स्वीकार किया जाना चाहिए और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- ❖ चेक-इन गतिविधि प्रत्येक सत्र की शुरुआत में आयोजित की जानी चाहिए।
- ❖ बच्चों को खुद को किसी भी रूप में अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिसमें वे सहज हों।
- ❖ छात्रों के लिए उच्च लेकिन प्राप्य अपेक्षाएं निर्धारित की जानी चाहिए जो उनके विकास और क्षमताओं के अनुसार हों।
- ❖ जब अनुशासन की आवश्यकता हो तो ध्यान व्यवहार को बदलने पर होना चाहिए न कि बच्चे को दोष देने या लेबल लगाने पर।

हेड टीचर अथवा संबंधित प्रभारी को साथ में लेकर

- ❖ सुनिश्चित करें कि ग्रेड 1 में सभी नए प्रवेशकर्ता विद्यार्थी रेमिडीएशन कार्यक्रम से होकर गुजरें
- ❖ कक्षा द्वारा प्राप्त किए जाने वाले सभी परिभाषित लक्ष्यों को चार्ट/पोस्टर के माध्यम से कक्षा में प्रदर्शित किया जाना चाहिए।
- ❖ खिलौने, खेल, खेलकूद, पहेलियाँ, क्विज़, वर्कशीट/वर्कबुक, स्टोरीबुक आदि का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाना चाहिए।
- ❖ बच्चों को लिखित शब्द, स्कूल का नाम बोर्ड, बस स्टैंड का नाम और नंबर, विज्ञापन, होर्डिंग, दीवार नारे, पैक किए गए सामान पर लेख, समाचार पत्र, टीवी कार्यक्रम आदि पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- ❖ स्कूल/सार्वजनिक पुस्तकालयों/डिजिटल पुस्तकालयों/खिलौना पुस्तकालयों को शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाया जाएगा और छात्रों को स्कूल समय के बाद भी उपलब्ध कराया जाएगा।
- ❖ निपुण भारत मिशन के तहत शिक्षकों की क्षमता निर्माण और शिक्षक संसाधन सामग्री का विकास किया जाना चाहिए।

उच्च अधिकारियों एंव प्रशिक्षण संस्थानों के साथ मिलकर

- ❖ बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (राज्य/जिला/स्थानीय क्षेत्र के संदर्भ के लिए विशिष्ट शिक्षण अधिगम सामग्री (टीएलएम) उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- ❖ स्कूलों को राज्य/जिला विशिष्ट शिक्षण संवर्धन कार्यक्रम (एलईपी) का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए।
- ❖ सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित करना
- ❖ अकादमिक प्रशिक्षण के साथ साथ शिक्षकों के लिए एफएलएन मिशन के दृष्टिकोण– पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र,संसाधन, मूल्यांकन आदि बिन्दुओ पर विशेष प्रशिक्षण
- ❖ ऑनसाइट शैक्षणिक सहायता प्रदान करें
- ❖ शिक्षकों के लिए नई शैक्षणिक तकनीकों को अपनाने में मूलभूत अभ्यास सीखने का विशेष प्रशिक्षण सत्र आयोजित करवाना

विद्यालय प्रमुख द्वारा स्वंय के स्तर से किये जाने वाले कार्य

- ❖ विद्यालय में सीखने के वातावरण की निगरानी एवं पर्यवेक्षण करना
- ❖ निपुण भारत के लक्ष्यों के विरुद्ध गतिविधियों की प्रगति
- ❖ ब्लॉक में मिशन के लक्ष्यों के संदर्भ में क्लस्टर स्तर पर जागरूकता अभियान चलायें
- ❖ विद्यार्थी के सीखने व मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति में अभिभावक की भागीदारी और समुदाय का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना

शिक्षकों की भूमिका और उनका विद्यालय प्रमुख द्वारा पर्यवेक्षण

शिक्षक अपनी कक्षाओं में, विशेषकर प्रारंभिक वर्षों में छात्रों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक अपनी कक्षाओं के प्रबंधक होते हैं और उन्हें

- ❖ एक सौहार्दपूर्ण, समावेशी सीखने का माहौल बनाना होगा
- ❖ छात्रों का मार्गदर्शन करना होगा और उनका पोषण करना होगा
- ❖ परामर्शदाता बनना होगा, और छात्रों में तनाव, चिंता और अन्य व्यवहार संबंधी समस्याओं के किसी भी लक्षण या संकेत को सुनना और देखना होगा।

बुनियादी स्तर के शिक्षार्थियों के साथ, शिक्षकों को ऐसी परिस्थितियाँ बनाने की ज़रूरत है जो उनके दैनिक जीवन को दोहराएँ और फिर सीखने की उनकी योजना को लागू करें।

सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम शिक्षकों की व्यापक क्षमता निर्माण होगा। नतीजतन, मुख्य शिक्षकों को शिक्षाशास्त्री के रूप में नेतृत्व करने की आवश्यकता होगी, जबकि शिक्षकों को अपने प्रत्येक ग्रेड/विषय में कक्षा लेनदेन के माध्यम से प्राप्त किए जाने वाले सीखने के परिणामों के बारे में स्पष्ट होना होगा।

एफएलएन मिशन के लिए सामुदायिक भागीदारी रणनीतियों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने में प्रमुख भागीदार के रूप में प्रधान शिक्षकों (हैड टीचर) और शिक्षकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

निपुण भारत मिशन – केस स्टडी

राजस्थान राज्य के जयपुर ग्रामीण जिले में स्थित शैक्षणिक ब्लॉक गोबिंदगढ़ ग्राम पंचायत नांगल कोजू में एक उच्च प्राथमिक विद्यालय डेहरा की ढाणी स्थित है। इस विद्यालय को राज्य सरकार ने वर्ष 2021 में अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में परिवर्तित कर दिया। अंग्रेजी माध्यम शिक्षण पद्धति में यहां पहला सत्र 2022-23 से शुरू हुआ।

जनवरी 2022 में अंग्रेजी माध्यम विद्यालय की आवश्यकताओं के अनुसार राजकीय शैक्षिक कार्मिकों में से में साक्षात्कार के माध्यम से प्राचार्य और अन्य शैक्षणिक पदों पर नियुक्तियां की गई। जुलाई 2022 में इस विद्यालय का नामांकन 60 विद्यार्थियों से कम था जो वर्तमान में 180 विद्यार्थियों से अधिक है और यह विद्यालय अभी कक्षा 9 तक ही संचालित है।

इस विद्यालय में पिछले दो वर्षों में लगभग 60 लख रुपए के विकास कार्य संपादित हुए हैं- जिसमें सांसद कोष, विधायक कोष, पंचायत समिति, ग्राम पंचायत आदि सरकारी एजेंसियों का महत्वपूर्ण योगदान है, इसके अलावा भामाशाहों का भी निरंतर सहयोग बना रहता है।

विद्यालय में नामांकन वृद्धि में सर्वाधिक योगदान निपुण भारत मिशन के तहत निर्धारित सीखने के प्रतिफलो की पूर्ति किए जाने का प्रयास रहा, बच्चों को नई शैक्षिक तकनीकों - एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग, खेल-खेल गतिविधि आधारित शिक्षण और आनंददायक शैक्षणिक वातावरण निर्माण में यहां के शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिससे विद्यार्थी यहां नियमित उपस्थिति देते हैं, नामांकन में लगातार बढ़त जारी है यहां तक की निजी अंग्रेजी विद्यालयों में जिन अभिभावकों के बच्चे पढ़ते थे, उन अभिभावकों ने भी अपने बच्चों का प्रवेश इस विद्यालय में करवाया है, जो कि इस विद्यालय की गुणवत्ता का परिचायक है।

जनसंख्या संकेन्द्रण से दूर एक छोटी सी ढाणी में स्थित यह विद्यालय केवल शैक्षिक गुणवत्ता के आधार पर ही लगातार विकास कर रहा है, शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए उनको लगातार आधारभूत साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजा जाता है। इसके अलावा सभी शिक्षक अपनी डायरी, विद्यार्थी डायरी और हॉलिस्टिक कार्ड का नियमित रूप से संधारण करते हैं

विद्यालय विकास में यहां के टीम वर्क का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रधानाचार्य ने विकेंद्रित नेतृत्व प्रणाली के माध्यम से विद्यालय संचालित किया हुआ है, इससे सभी शिक्षक अपनी-अपनी जिम्मेदारियां समझते हैं और उनको पूर्ण करने में अपना योगदान देते हैं। अभी तक किसी भी प्रकार की प्रशासकीय शिथिलता का सामना इस विद्यालय को नहीं करना पड़ा है।

निपुण भारत मिशन के लक्ष्य को प्राप्त करने में विद्यार्थियों की ग्रेडिंग की गई है, धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थियों को उनके स्तर के अनुरूप अध्ययन करवा कर कक्षा स्तर पर लाने का प्रयास किया जा रहा है, अभिभावकों के साथ नियमित चर्चा की जाती है, अंग्रेजी माध्यम विद्यालय होने के उपरांत भी नई शिक्षा नीति की अपेक्षा अनुरूप शिक्षण/ सिखाने का माध्यम प्राथमिक स्तर पर मूलतः मातृभाषा व स्थानीय भाषा रखने का प्रयास किया गया है, अंग्रेजी को द्वितीयक भाषा के तौर पर प्रयोग लिया जाता है।

जयपुर भास्कर

डेहरा की ढाणी वासियों ने सोच लिया था बंद हो जाएगा स्कूल, लेकिन स्टाफ ने जन सहयोग से बदल दी तस्वीर

सरकारी स्कूल में नामांकन 50 से बढ़कर 208 पहुंचाया, ऐसी पाजिटिव सोच की नितांत जरूरत है

निष्कर्ष :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शुरुआत में ही आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान के महत्व का स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि यदि निपुण भारत मिशन के तहत निर्धारित सीखने के प्रतिफलों को यदि निर्धारित समय अवधि में प्राप्त नहीं किया गया तो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता खत्म हो जाएगी

इसलिए यह विचारणीय बिंदु है कि पूरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार निपुण भारत मिशन की सफलता पर निर्भर है और इस मिशन की सफलता राष्ट्रीय स्तरीय स्टेकहोल्डर के साथ-साथ राज्य स्तरीय हितधारकों, विद्यालय के शिक्षकों, अभिभावकों को और विद्यालय प्रमुख पर टिका हुआ है।

विद्यालय प्रमुख/संस्था प्रधान निरीक्षण, पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन के सतत क्रम में इस मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक भूमिका निभा सकता है।

इस मॉड्यूल लेखन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की वेबसाइट पर उपलब्ध साहित्य का उपयोग करते हुए आपके समक्ष निपुण भारत मिशन और उसमें निहित सीखने के प्रतिफल और उनको प्राप्त करने में संस्था प्रधान की क्या भूमिका हो सकती है? इस विषय पर समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है, अपेक्षा है कि आप इस लेख के माध्यम से अपनी समझ विकसित करते हुए अपनी भूमिका स्पष्ट कर पाएंगे।

.. ..

मॉड्यूल के संदर्भ में कुछ यू ट्यूब लिंक /वेबसाईट /रेफरेंस बुक्स/क्यू आर कोड

1. https://youtu.be/BFRm2sKzfaU?si=wKPseUTGPUbRPBGf
2.
3. PM SHRI FRAMEWORK 1ST
4. https://nipunbharat.education.gov.in/
5. https://diksha.gov.in/play/collection/do_31341784377934643217 78?contentId=do_31334074769100800016702
6. https://diksha.gov.in/play/collection/do_31341784377934643217 78?contentId=do_31334074775403724817836

.....

लेखक परिचय

मिथलेश मंडोवरा

जन्म स्थान -शाहपुरा जयपुर। शिक्षा - जवाहर नवोदय विद्यालय पावटा जयपुर से रही, ये यहां अपने बैच के प्रतिभाशाली टॉपर विद्यार्थियों में शामिल रहे। राजकीय सेवा में इनका चयन व्याख्याता (भूगोल विषय) के तौर पर सत्र 2010-11 में हुआ। प्राचार्य पद पर इनकी पदोन्नति जून 2019 में हुई। झालावाड़ जिले में प्राचार्य पद पर कार्य करते हुए 2020-21 में 'श्रेष्ठ विद्यालय प्रबंधन एंव नेतृत्व' हेतु सम्मानित हुए।

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान गोनेर के द्वारा इन्हें हाल ही में राज्य स्तरीय संसाधन ग्रुप (SRG) में शामिल किया गया है और वर्तमान में सीमेट गोनेर के राज्य स्तरीय कौर ग्रुप के सदस्य भी है।

ये राजस्थान प्रशासनिक सेवा में सहायक निदेशक बाल अधिकारिता विभाग पद पर यह कार्य कर चुके हैं। राज्य प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षण के दौरान इनको उदयपुर ट्रेनिंग बैच 2016 के ऑलराउंडर बेस्ट ट्रेंनी अवार्ड से सम्मानित किए गए था।

अध्यापन की रूचि ने इन्हे प्रशासनिक सेवा से वापस शिक्षा सेवा की ओर लौटा दिया। वर्तमान में राजस्थान राज्य सरकार में स्कूल प्राचार्य पद पर कार्यरत है, वर्तमान में इनका पदस्थापन महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय अंग्रेजी माध्यम डेहरा की ढाणी, गोविंदगढ़, जयपुर में है।